ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

गांवों में स्वच्छ भारत अभियान का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

(उत्तराखण्ड के चम्पावत जिले के चम्पावत तहसील के जूप पटुआ गांव के विषेश संदर्भ में)

डॉ. कवलजीत कौर

समाजशास्त्र विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चम्पावत, उत्तराखण्ड

सारांश–

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू हुआ। इस योजना का उद्देश्य पूरे देश को स्वच्छ बनाना है। 2 अक्टूबर 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध कराना है। ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था गांव में सफाई और सुरक्षित तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध हो। इस अभियान को सफल बनाने के लिए देश के सभी नागरिक के सहयोग की आशा व्यक्त की गयी। प्रस्तुत अध्ययन का उद्दे य उत्तराखण्ड राज्य के चम्पावत जिले के तहसील चम्पावत के जूप पटुआ गांव में स्वच्छ भारत अभियान का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि उत्तराखण्ड के चम्पावत जिले के चम्पावत तहसील के जूप पटुआ गांव में स्वच्छ भारत अभियान पूर्ण रूप से सफल रहा है। गांव में सभी परिवारों में पक्के शौचालय हाने के कारण यह गांव खुले शौच से मुक्त है।

प्रस्तावना–

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था, ''स्वच्छता, स्वतंत्रता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।'' स्वस्थ और रोगमुक्त जीवन के लिए ही नहीं, बल्कि मनुष्य के रूप में गरिमापूर्ण जीवन के लिए भी उचित स्वच्छता और साफ–सफाई आव यक घटक है। विश्व के अनेक भागों में मूलभूत स्वच्छता सेवाओं तक पहुंच की कमी एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। वर्श 2015 में, विश्व भर में 2.3 बिलियन लोगों के पास मूलभूत स्वच्छता सेवाओं का अभाव था। भारत में स्वच्छता की कमी को एक प्रमुख समस्या के रूप में माना गया है। भारत की आजादी के कई साल बाद भी 2014 में भारत में लगभग 10 करोड़ ग्रामीण औश्र लगभग एक करोड़ शहरी परिवारों के पास स्वच्छ शौचालय नहीं थे और 55 करोड़ लोग देश की लगभग आधी आबादी अभी तक खुले में शौच जाते थे।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू हुआ। इस योजना का उद्देश्य पूरे देश को स्वच्छ बनाना है। 2 अक्टूबर 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध कराना है। ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था गांव में सफाई और सुरक्षित तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध हो। इस अभियान को सफल बनाने के लिए देश के सभी नागरिक के सहयोग की आशा व्यक्त की गयी। इस अभियान को शुरू करने से पहले ही निर्धारित कर दिया गया कि ये अभियाान केवल सरकार का कर्तव्य नहीं राष्ट्र को स्वच्छ बनाने की जिम्मेदारी इस देश के सभी नागरिकों की है। भारत सरकार द्वारा पहले भी कई कार्यक्रम चलाये गये। सन 1999 में पुर्ण स्वच्छता अभियान जून 2003 में महीने में निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना तथा इसके बाद 2012 में निर्मल भारत अभियान की शुरूआत हुई। जून 2003 के महीने में निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना ने लोगों को पूर्ण स्वच्छता की विस्तृत जानकारी देने पर पर्यावरण को साफ रखने के लिए और पंचायत, ब्लॉक और जिलों द्वारा गांव को खुल में शौच से मुक्त करने के लिए प्रारम्भ की गयी। इसके बाद यह कार्यक्रम 2 अक्टूबर 2014 को चलाये गये स्वच्द भारत अभियान के जितने प्रभाव ाली नहीं थे।

स्वच्छ भारत मिशन–ग्रामीण (एसबीएम)– स्वच्छता के क्षेत्र में तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की जयंती पर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के स्वच्द भारत (क्लीन इंडिया) मिशन की घोषणा की ताकि स्वच्छता, साफ–सफाई को बढ़ावा देकर और खुले में शौच जाने को समाप्त करके ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। इस मिशन के लक्ष्यों को, राश्ट्रपिता की 150वीं जयंती के अवसर पर, 2 अक्टूबर 2019 तक हासिल किया जाना है।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत बहु–आयामी अवधारणा को अपनाया गया है, जिसमें निम्नलिखित शामिल है–

समुदाय की भागीदारी– स्वामित्व तथा अनवरत प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए शौचालयों का निर्माण करने में लाभार्थी/समुदायों की समुचित भागीदारी, वित्तीय रूप से या अन्यथा, सुनिश्चित करना। विकल्प में नम्यता– स्वच्छ भारत मिशन में कई विकल्प मुहैया कराकर नम्यता प्रदान की गई है ताकि गरीब/वंचित परिवार बाद में अपनी जरूरतों और अपनी वित्तीय स्थिति के अनुसार अपने शौचालयों को बेहतर बना सकें। ऐसा इसलिए सुनिश्चित किया गया है ताकि स्वच्छ शौचालयों का निर्माण सुनिश्चित किया जा सके, जिससे मल का सुरक्षित किया जा सके, जिससे मल का सुरक्षित परिरोध और निपटान सुनिश्चित होता है। आने वाली लागत के साथ प्रौद्योगिकीय विकल्पों की उदाहरणात्मक सूची उपलब्ध कराई गई है ताकि प्रयोगकर्ता की प्राथमिकताओं और स्थान–विनिर्दिष्ट आव यकताओं को पूरा किया जा सकें।

क्षमता निर्माण– स्वच्छ भारत मिशन से आरंभिक स्तर पर आदतों में बदलाव लाकर जिलों की संस्थागत क्षमता वृद्धि और क्रियान्वयन एजेन्सियों की क्षमताओं में सुधार करेगा ताकि दृढ़ता से इस कार्यक्रम को एक समयबद्ध तरीके से पूरा किया जा सके और सामूहिक निश्कर्शो का मूल्यांकन किया जा सके। व्यवहार में परिवर्तन– समुदायों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए कार्यकलापों का क्रियान्वयन करने हेतु राज्य–स्तरीय संस्थाओं के निष्पादन को प्रोत्साहित करना। जागरूकता लाने पर जोर देना, सोच बदलने पर ध्यान देना, घरों, विद्यालयों, आंगनवाडियों, सामुदायिक सार्वजनिक स्थानों में सफाई संबंधी सुविधाओं के लिए सामुदायिक व्यवहार में बदलाव लाना तथा मांग सजृन करना और ठोस तथा तरल अपशिष्ट प्रबंधन कार्यकलापों पर जोर देना।

व्यापक प्रतिबद्धता– स्वच्छ भारत मिशन के तहत स्वच्छ भारत कोष की स्थापना की गई ताकि कार्पोरेट सामाजिक दायित्व को बढ़ावा दिया जा सके और निजी संगठनों, व्यक्तियों और समाज–सेवियों से अंशदान स्वीकार किया जा सके। प्रौद्योगिकी का प्रयोग– इस कार्यक्रम के लिए सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नागरिकों को भारत में प्रत्येक ग्रामीण परिवार के लिए शौचालयों की उपलब्धता पर नजर रखने के लिए अनुमत करती है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत लगभग 90 प्रतिशत शौचलय पहले से ही मानचित्र पर निर्धारित कर दिए गए है। न केवल सरकार द्वारा अपितु कुछ नागरिकों द्वारा भी अनेक मोबाइल एप्लीकेशन शुरू किए गए है, जो नगर निगमों का ध्यान अस्वच्छ क्षेत्रों की ओर खींचते है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तराखण्ड राज्य के चम्पावत जिले के तहसील चम्पावत के जूप पटुआ गांव में स्वच्छ भारत अभियान का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र– चम्पावत तहसील उत्तराखंड राज्य के चम्पावत जनपद की एक तहसील है। इसके पूर्व में नेपाल, पश्चिम में पाटी तहसील, उत्तर में लोहाघाट तहसील तथा दक्षिण में श्री पूर्णागिरी तहसील है। इस तहसील में 186 गांव आते है। इसमें एक गांव जूप पटुआ है जिसमें कुल 124 परिवार रहते है। 2011 की जनगणना के अनुसार जूप पटुआ गांव की जनसंख्या 511 है जिसमें 259 पुरूष तथा 252 महिलाऐं है। यह गांव 21.21 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है। यह गांव चोरा सेठी ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आता है।

साहित्य सर्वेक्षण–

सुरेन्द्र कुमार तिवारी (2014) के अनुसार, साफ–सफाई से तथा स्वच्छ जल से रोगों पर नियंत्रण पाया गया। यह स्वस्थ शारीरिक ज्ञान के वातावरण की ओर पहला कदम है जो ज्ञान और स्वास्थ्य दोनों में लाभ पहुंचाता है। रूदेश एस. के. के अनुसार, स्वच्छता की बुनियादी धारणा मानवीय कार्यों को ऐसे तरीके से व्यवस्थित करना है जिससे जल और भोजन दूषित न हो। इससे स्वच्छता और सम्मानीय जीवन प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

डर्मने अभय बी. (2014) के अनुसार, स्वास्थ्य और स्वच्छता मानव जीवन के सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। पूरे देश में स्वच्छता को विकसित करना और स्वच्छता की व्यवस्था करना जन स्वास्थ्य में सर्वाधिक प्रभावी व्यावधानों के बीच है। नायक अपर्णा (2014) के अनुसार, अगले पाँच वर्शो में स्वच्छ भारत लक्ष्य को पूरा करने का उद्दे य भारत में स्वच्छता व्यवस्था में परिवर्तन लाकर उसे ठीक करना है। शर्मा बी. और शैलेजा, बद्रा (2015) के अनुसार भारत एक विकासशील देश है जो स्वच्छता की ओर केन्द्रित करने का प्रयास कर रहा है। राष्ट्र को सुव्यवस्थित करना चाहता है। आधुनिक भारत ये स्वच्छता पर अध्ययन को केन्द्रित करता है।

मो. इसरार खान एवं प्रिंयका वर्मा (2016) के अनुसार, स्वच्छ भारत अभियान अखिल भारतीय स्तर पर मुख्यतः खुले में शौच की प्रवृत्ति का 2019 तक मुलतः उन्मूलन करने तथा भारतीयों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस अभियान के

अन्तर्गत गरीब परिवारों को मुफ्त में भौचालय की सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है जिससे लोगों में भौचालय का उपयोग करने की प्रवृत्ति जागृत हो सके।

मो. इसरार खान एवं जूली सिंह (2016) के अनुसार, अधिकांश लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक है। वह इस अभियान को चलाने में अपना योगदान दे रहे है। जब तक लोग इतने जागरूक नहीं हो जाते कि वह स्वच्छता को अपना कर्तव्य न समझने लगे तब तक सम्पूर्ण स्वच्छ भारत अभियान एक सपना है। साथ ही स्वच्छ भारत अभियान को कायिक स्वच्छता से आगे बढ़कर सामाजिक एवं व्यवहारिक स्वच्छता को बढ़ावा देने हेतु कर्तव्यशील बनाने की अत्यंत आव यकता है।

प्रतिदर्श– प्रस्तुत अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के चम्पावत जिले के चम्पावत तहसील के जूप पटुआ गांव के 124 परिवारों में से 50 प्रतिशत परिवारों का चयन अर्थात् 62 परिवारों का चयन उद्देश्यपूर्वक प्रतिदर्श द्वारा किया गया। चयनित प्रतिदर्श को निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया–

तालिका संख्या – 1

प्रत्युत्तर		संख्या	पतिशत
आयु वर्ग	30 वर्ष से कम	18	29.03
	30 – 35 वर्ष	25	40.32
	35 – 40 वर्ष	19	30.65
	40 वर्ष से अधिक	00	00
	योग	**62**	**100**
शिक्षा	आठवीं से कम	10	16.13
	हाईस्कूल	19	30.65
	इण्टर	26	41.93
	स्नातक	05	8.06
	स्नातकोत्तर	02	3.23
	योग	**62**	**100**
लिंग	महिला	31	50.00
	पुरूष	31	50.00
	योग	**62**	**100**
वैवाहिक स्थिति	विवाहित	56	90.32
	विधवा / विधुर	06	9.68
	तलाकशुदा	00	00
	योग	**62**	**100**
परिवार में बच्चों की संख्या	नहीं हैं	00	00
	1	07	11.29
	2	38	61.29
	3	15	24.19
	3 से अधिक	02	3.23
	योग	**62**	**100**
औसत मासिक आय	10000 से कम	11	17.74
	10000 से 30000	31	50.00
	30000 से 50000	18	29.03
	50000 से अधिक	02	3.23
	योग	**62**	**100**

तालिका संख्या 1 द्वारा ज्ञात होता है कि 29.03 प्रतिशत उत्तरदाता 30 वर्ष से कम आयु की है। 40.32 प्रतिशत उत्तरदाता 30 से 35 वर्ष की है। 30.65 प्रतिशत महिलाऐं 35 से 40 वर्ष की है। उत्तरदाताओं में 16.13 प्रतिशत ने आठवीं कक्षा से कम शिक्षा प्राप्त की है। 30.65 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की है। 41.93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इण्टर तक की शिक्षा प्राप्त की है। 8.06 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्नातक तथा केवल 3.23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की है। चुने गए उत्तरदाताओं में से 50 प्रतिशत महिलाऐं है तथा 50 प्रतिशत पुरूष है। 90.32 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है जबकि 9.68 प्रतिशत उत्तरदाता विधवा / विधुर है। चयनित उत्तरदाताओं में 11.29 प्रतिशत उत्तरदाताओं के केवल एक सन्तान है। 61.29 प्रतिशत उत्तरदाताओं के दो सन्तान है। 24.19 प्रतिशत उत्तरदाताओं के तीन सन्तान है जबकि 3.23 प्रतिशत

उत्तरदाताओं के तीन से अधिक सन्तान है। चयनित उत्तरदाताओं में से 17.74 प्रतिशत उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 10000 से कम है। 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 10000 से 30000 के मध्य है। 29.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 30000 से 50000 के मध्य है जबकि 3.23 प्रतिशत उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 50000 से अधिक है।

प्राप्त आंकड़े–

तालिका संख्या – 2 (शौचालय प्रकृति)

प्रत्युत्तर		संख्या	प्रतिशत
क्या आपके घर में शौचालय है?	हाँ	62	100
	नहीं	00	00
शौचालय किस प्रकार का है?	कच्चा	00	00
	पक्का	62	100
शौचालय कहाँ बना है?	घर में	13	20.97
	घर से बाहर	41	66.13
	दोनों जगह	08	12.90
	नहीं बना	00	00
शौचालय का निर्माण किसके द्वारा करवाया गया?	सरकारी अनुदान द्वारा	52	83.87
	स्वयं द्वारा	10	16.13
	नहीं है	00	00
शौच करने के बाद आप हाथ धोते हैं?	हाँ	62	100
	कभी–कभी	00	00
	नहीं	00	00
आप हाथ किससे धोते हैं?	मिट्टी से	05	8.06
	साबुन से	55	88.71
	दोनों से	02	3.23
	नहीं धोते	00	00
शौचालय की साफ–सफाई कब करते हैं?	प्रतिदिन	43	69.35
	महीने में	00	00
	सप्ताह में	19	30.65
शौचालय की सफाई किससे करते हैं?	डिटर्जेंट पाउडर	23	37.10
	सिर्फ पानी	00	00
	हार्पिक	30	48.39
	फिनायल	09	14.51
योग		**62**	**100**

तालिका संख्या 2 द्वारा ज्ञात होता है कि सभी उत्तरदाताओं (100 प्रतिशत) के घरों में शौचालय है जो पक्के बने है। 20.97 प्रतिशत उत्तरदाताओं के भौचालय घर में है। 66.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं के भौचालय घर से बाहर है, जबकि 12.90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के शौचालय घर तथा बाहर दोनों जगह है। 83.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं के शौचालयों का निर्माण सरकारी अनुदान द्वारा हुआ है, जबकि 16.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा शौचालयों का निर्माण स्वयं के खर्च से किया गया है। सभी उत्तरदाता भौच करने के बाद हाथ धोते है। 8.06 प्रतिशत उत्तरदाता शौच के बाद अपने हाथ मिट्टी से धोते है। 88.71 प्रतिशत उत्तरदाता शौच के बाद अपने हाथ साबुन से धोते है, जबकि 3.23 प्रतिशत उत्तदाता शौच के बाद अपने हाथ मिट्टी व साबुन दोनों से धोते है। 69.35 प्रतिशत उत्तरदाता अपने शौचालयों की प्रतिदिन सफाई करते है, जबकि 30.65 प्रतिशत उत्तरदाता अपने शौचालयों की साप्ताहिक सफाई करते है। 37.10 प्रतिशत उत्तरदाता अपने शौचालयों की सफाई डिटर्जेट पाउडर से करते है। 48.39 प्रतिशत उत्तरदाता अपने शौचालयों की सफाई हार्पिक से करते है, जबकि 14.51 प्रतिशत उत्तरदाता अपने शौचालयों की सफाई फिनाइल से करते है।

तालिका संख्या – 3 (स्वच्छता व्यवहार)

प्रत्युत्तर		संख्या	प्रतिशत
क्या खाना खाने से पहले हाथ धोते है?	हाँ	48	77.42
	नही	14	22.58

पहने हुए कपड़े रोज किससे धोते/बदलते हैं?	हाँ	53	85.48
	नही	09	14.52
क्या आप रोज नहाते हैं?	हाँ	56	90.32
	नही	06	9.68
क्या आप व्यक्तिगत स्वच्छता (नाखून काटना, दाँत साफ करना आदि) का नियमित ध्यान रखते है?	हाँ	49	79.03
	नही	13	20.97
योग		**62**	**100**

तालिका संख्या 3 द्वारा ज्ञात होता है कि 77.42 प्रतिशत उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथ धोते है, जबकि 22. 58 प्रतिशत उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथ नहीं धोते है। 85.48 प्रतिशत उत्तरदाता अपने पहने हुए कपड़ों को रोज बदलते/धोते है, जबकि 14.52 प्रतिशत उत्तरदाता अपने पहने हुए कपड़ों को रोज बदलते/धोते नहीं है। 90.32 प्रतिशत उत्तरदाता रोज नहाते है, जबकि 9.68 प्रतिशत उत्तरदाता रोज नहीं नहाते है। 79.03 प्रतिशत उत्तरदाता आपने व्यक्तिगत स्वच्छता (नाखून काटना, दाँत साफ करना आदि) का नियमित ध्यान रखते है, जबकि 20.97 प्रतिशत उत्तरदाता आपने व्यक्तिगत स्वच्छता (नाखून काटना, दाँत साफ करना आदि) का नियमित ध्यान नहीं रखते है।

तालिका संख्या – 4 (घर का वातावरण)

प्रत्युत्तर		**संख्या**	**प्रतिशत**
आप अपने घर की सफाई करते हैं?	हाँ	62	100
	नही	00	00
पीने योग्य जल का स्त्रोत कहाँ है?	घर में	56	90.32
	घर से बाहर	06	9.68
घर से जल निकासी की व्यवस्था कैसी है?	कच्ची	03	4.84
	पक्की	59	95.16
क्या घर में सूर्य के प्रकाश, हवा आदि की व्यवस्था है?	हाँ	41	66.13
	नही	21	33.87
योग		**62**	**100**

तालिका संख्या 4 द्वारा ज्ञात होता है कि सभी उत्तरदाता अपने घर की सफाई करते है। 90.32 प्रतिशत उत्तरदाता के घर में पीने योग्य जल उपलब्ध है, जबकि 9.68 प्रतिशत उत्तरदाता घर से बाहर से पीने योग्य जल लाते है। 4. 84 प्रतिशत उत्तरदाता के घर से जल निकासी की व्यवस्था कच्ची है, जबकि 95.16 प्रतिशत उत्तरदाता के घर से जल निकासी की व्यवस्था पक्की है। 66.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर में सूर्य के प्रकाश, हवा आादि की व्यवस्था है जबकि 33.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर में सूर्य के प्रकाश, हवा आादि की व्यवस्था नहीं हैं।

तालिका संख्या – 5 (गांव का वातावरण)

प्रत्युत्तर		**संख्या**	**प्रतिशत**
घर के कूड़े का निस्तारण कहाँ करते है?	कहीं पर भी	00	00
	कूड़ेदान में	62	100
क्या सभी तरह का कूड़ा एक ही साथ डालते है?	हाँ	08	12.90
	नहीं	54	87.10
गांव की सड़क कैसी है?	पक्की	62	100
	कच्ची	00	00
आपके घर के आस–पास का वातावरण कैसा है?	स्वच्छ	62	100
	गन्दा	00	00

तालिका संख्या 5 द्वारा ज्ञात होता है कि सभी उत्तरदाता घर के कूड़े का निस्तारण कूड़ेदान में करते है। 12.90 प्रतिशत उत्तरदाता सभी तरह के कूड़े को एक ही कूड़ेदान में डालते है, जबकि 87.10 प्रतिशत उत्तरदाता सभी तरह के कूड़े को अलग–अलग कूड़ेदानों में डालते है। गांवों में सभी जगह पक्की सड़के है। सभी उत्तरदाताओं के घर के आस–पास का वातावरण साफ है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि उत्तराखण्ड के चम्पावत जिले के चम्पावत तहसील के जूप पटुआ गांव में स्वच्छ भारत अभियान पूर्ण रूप से सफल रहा है। गांव

में सभी परिवारों में पक्के शौचालय हाने के कारण यह गांव खुले भौच से मुक्त है। ग्रामीण अपने स्वास्थ्य तथा स्वच्दता के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है। अधिकतर शौचालयों का निर्माण सरकारी अनुदानों द्वारा हुआ है। गांव के लोग कूड़े को यत्र–तत्र न फेंककर कूड़ेदान का प्रयोग करते है जिससे गांव का वातावरण स्वच्छ बना रहता है और गांववासियों का स्वास्थ्य भी उत्तम है। गांव में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भी स्वच्छता कार्यक्रम समय–समय पर चलाए जाते है, जिसमें गांव के सभी लोग बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते है। स्वच्छ भारत अभियान से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाकर भारत में एक अच्छी सभ्यता का विकास किया जा रहा है जिससे भारत को विश्व मानचित्र पर एक सुसभ्य देश के रूप में दिखाया जा सकेगा। भारत में अस्वच्छता की वजह से जो विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैली हुई हैं उन पर काबू पाया जा सकेगा। इसके लिए स्वच्छ भारत अभियान एक बहुत ही अच्छी योजना है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. Aparna Nayak. Clean India. Journal of Geoscience and Environment Protection, 2015; 03:133-139. doi: 10.4236/gep. 2015. 35015. Down loaded on 28 July 2015 from http://creativecommous.org/licenses/by/4. 0.
2. Khan Mohammad Israr & Priyanka Verma, 2016, 'Swachh Bharat Abhiyaan ka Gram Panchayat isratriya aalochanatamk vishleshan', International Journal of Advanced Research and Development, vol. 1, issue 8, pp. 48-56 ISSN: 2455-4030
3. Khan Mohammad Israr & Juli Singh, 2016, 'Swachh Bharat Abhyaan ka Prathmik vidhyalay Swachhta par prabhav ka susham adhyann', International Journal of Applied Research, vol. 2(8), pp. 838-841 ISSN Print: 2394-7500
4. Mane Abhay B. Swachh Bharat Mission for India's Sanitation Problem: Need of the Hour. Unique Journal of Medical and Dental Sciences (ISSN 2347-5579). 2014; 02(04):58-60. www.ujconline.net
5. Rudresh Kumar Sugam, Sonali Mittra, Arunabha Ghosh. Kachra Mukt, Shouchalaya Yukt Bharat. Council on Energy, Environment and Water. 2014, 584. http://ceew.in
6. Sharma V, Badra Shailja. International Journal of Advance Research in Science and Engineering (IJARSE). 2015; 4(01). http://www.IJARSE.com. ISSN – 2319-8354 (E).
7. Surendra Kumar Tiwari. The Study of Awareness of A National Mission: Swach Vidyalaya in the Middle School Student of Private and Public Schools. PARIPEX Indian Journal of Research (ISSN 2250-1991). 2014. www.paripex.in / http://indianjournalresearch.com